ÖSTERREICHISCHE
BIBELGESELLSCHAFT

Siehe, du bist schwanger geworden und
wirst ... n, dessen Namen
... denn [a]der HERR
... [12]Er wird ein Mann
wie ein Wildesel sein; seine Hand wider
jedermann und jedermanns Hand wider
ihn, und er wird sich all seinen Brüdern
vor die Nase setzen.[a]
[13]Und sie nannte den Namen des
HERRN, der mit ihr redete: [a]Du bist ein
Gott, der mich sieht*. Denn sie sprach:
Gewiss hab ich hier hinter dem hergese-
hen, der mich angesehen hat. [14]Darum
nannte man den Brunnen: [a]Brunnen des
Lebendigen, der mich sieht*. Er liegt zwi-
schen Kadesch und Bered.
[15]Und Hagar gebar Abram einen Sohn,
und Abram nannte den Sohn, den ihm
Hagar gebar, Ismael. [16]Und Abram war
sechsundachtzig Jahre alt, als ihm Hagar
den Ismael gebar.

## DER EWIGE BUND MIT ABRAHAM

**17** Als nun Abram neunund...
...ott, [a]wandle vor mir und sei fromm.
...einen Bund zwischen mir
...n und will dich über alle
...laisen mehren.
[3]Da fiel Abram auf sein Angesicht. Und
ott redete weiter mit ihm und sprach:
iehe, ich habe meinen Bund mit dir,
d du sollst ein Vater vieler Völker wer-
n. [5]Darum sollst du nicht mehr Ab-
n heißen, sondern Abraham soll...
...me sein,

# BIBELLESEPLAN 2023

# JAHRESLOSUNG 2023

Du bist ein Gott, der mich sieht.

**1 Mos/Gen 16,13 (L)**

Fotocredit: Nelson

Liebe Bibelleserin, lieber Bibelleser!

Der Bibelvers, der uns als Jahreslosung durch das Jahr 2023 begleitet, nimmt uns mit in die Familiengeschichten des ersten Buches der Bibel. In diesen Familien, bei Abraham und Sara und Hagar, bei Isaak und Rebekka, bei Jakob und Esau läuft nicht alles ideal; Spannungen und Konflikte bleiben nicht aus.

Eine Frau, Hagar, noch dazu eine Ausländerin und Sklavin, hält es nicht mehr aus und flieht. In der Wüste erlebt sie in überraschender Weise, dass sie nicht allein gelassen ist, sondern dass Gott längst um sie und ihre Sorgen, Nöte und Ängste weiß. Sie erfährt Zuspruch und Ermutigung und eine Perspektive für die Zukunft.

Hagar erfährt Gottes Nähe und Hilfe. Sie erlebt Gott als jemanden, der sie wahrnimmt und zu ihr spricht. Die Bibel ist voll von Erzählungen über Menschen, die staunend erleben, dass Gott sie und ihre ganz persönliche Situation längst kennt, sie wahrgenommen hat und diese Erfahrung ihrem Leben eine neue Richtung gibt.

Dieser Bibelleseplan ist eine Einladung an Sie, diesem Gott zu begegnen, der mit seinem liebevollen Blick alle wahrnimmt, die Übersehenen ebenso wie die, die volle Aufmerksamkeit genießen, die allein Gelassenen und Vergessenen ebenso wie die, die meinen, ohnehin bereits alles zu haben. Gott ist da – für Jede und Jeden!

Ihre
Dr. Jutta Henner

# JANUAR

Gott sah alles an, was er gemacht hatte:
Und siehe, es war sehr gut.

**1 Mos/Gen 1,31 (E)**

| | | |
|---|---|---|
| **So** | **1** | **Neujahr Ps 8** |
| Mo | 2 | 1 Mos/Gen 1,1-13 |
| Di | 3 | 1 Mos/Gen 1,14-25 |
| Mi | 4 | 1 Mos/Gen 1,26–2,4a |
| Do | 5 | 1 Mos/Gen 2,4b-17 |
| **Fr** | **6** | **Hl. Drei Könige Ps 72** |
| Sa | 7 | 1 Mos/Gen 2,18-25 |
| **So** | **8** | **Ps 71** |
| Mo | 9 | 1 Mos/Gen 3,1-13 |
| Di | 10 | 1 Mos/Gen 3,14-24 |
| Mi | 11 | 1 Mos/Gen 4,1-16 |
| Do | 12 | 1 Mos/Gen 4,17-26 |
| Fr | 13 | 1 Mos/Gen 6,1-4 |
| Sa | 14 | 1 Mos/Gen 6,5-22 |
| **So** | **15** | **Ps 105,1-15** |
| Mo | 16 | 1 Mos/Gen 7,1-16 |
| Di | 17 | 1 Mos/Gen 7,17-24 |
| Mi | 18 | 1 Mos/Gen 8,1-12 |
| Do | 19 | 1 Mos/Gen 8,13-22 |
| Fr | 20 | 1 Mos/Gen 9,1-17 |
| Sa | 21 | 1 Mos/Gen 9,18-28 |
| **So** | **22** | **Ps 105,16-45** |
| Mo | 23 | 1 Mos/Gen 11,1-9 |
| Di | 24 | 1 Mos/Gen 11,27–12,9 |
| Mi | 25 | 1 Mos/Gen 12,10-20 |
| Do | 26 | 1 Mos/Gen 13,1-18 |
| Fr | 27 | 1 Mos/Gen 14,1-16 |
| Sa | 28 | 1 Mos/Gen 14,17-24 |
| **So** | **29** | **Ps 40** |
| Mo | 30 | 1 Mos/Gen 15,1-21 |
| Di | 31 | 1 Mos/Gen 16,1-16 |

# FEBRUAR

Sara aber sagte: Gott ließ mich lachen.

**1 Mos/Gen 21,6 (E)**

| | | |
|---|---|---|
| Mi | 1 | 1 Mos/Gen 17,1-14 |
| Do | 2 | 1 Mos/Gen 17,15-27 |
| Fr | 3 | 1 Mos/Gen 18,1-15 |
| Sa | 4 | 1 Mos/Gen 18,16-33 |
| **So** | **5** | **Ps 62** |
| Mo | 6 | 1 Mos/Gen 19,1-14 |
| Di | 7 | 1 Mos/Gen 19,15-29 |
| Mi | 8 | 1 Mos/Gen 19,30-38 |
| Do | 9 | 1 Mos/Gen 21,1-21 |
| Fr | 10 | 1 Mos/Gen 22,1-19 |
| Sa | 11 | 1 Mos/Gen 23,1-20 |
| **So** | **12** | **Ps 61** |
| Mo | 13 | Röm 1,1-7 |
| Di | 14 | Röm 1,8-15 |
| Mi | 15 | Röm 1,16-17 |
| Do | 16 | Röm 1,18-32 |
| Fr | 17 | Röm 2,1-16 |
| Sa | 18 | Röm 2,17-29 |
| **So** | **19** | **Ps 60** |
| Mo | 20 | Röm 3,1-8 |
| Di | 21 | Röm 3,9-20 |
| Mi | 22 | Röm 3,21-26 |
| Do | 23 | Röm 3,27-31 |
| Fr | 24 | Röm 4,1-12 |
| Sa | 25 | Röm 4,13-25 |
| **So** | **26** | **Ps 64** |
| Mo | 27 | Röm 5,1-5 |
| Di | 28 | Röm 5,6-11 |

# MÄRZ

Was kann uns scheiden von der Liebe Christi?

**Röm 8,35 (E)**

| | | |
|---|---|---|
| Mi | 1 | Röm 5,12-21 |
| Do | 2 | Röm 6,1-11 |
| Fr | 3 | Röm 6,12-23 |
| Sa | 4 | Röm 7,1-6 |
| **So** | **5** | **Ps 25** |
| Mo | 6 | Röm 7,7-13 |
| Di | 7 | Röm 7,14-25 |
| Mi | 8 | Röm 8,1-11 |
| Do | 9 | Röm 8,12-17 |
| Fr | 10 | Röm 8,18-25 |
| Sa | 11 | Röm 8,26-30 |
| **So** | **12** | **Ps 10** |
| Mo | 13 | Röm 8,31-39 |
| Di | 14 | Röm 9,1-5 |
| Mi | 15 | Röm 9,6-13 |
| Do | 16 | Röm 9,14-29 |
| Fr | 17 | Röm 9,30–10,4 |
| Sa | 18 | Röm 10,5-15 |
| **So** | **19** | **Ps 84** |
| Mo | 20 | Röm 10,16-21 |
| Di | 21 | Röm 11,1-10 |
| Mi | 22 | Röm 11,11-16 |
| Do | 23 | Röm 11,17-24 |
| Fr | 24 | Röm 11,25-32 |
| Sa | 25 | Röm 11,33-36 |
| **So** | **26** | **Ps 69,1-16** |
| Mo | 27 | Mt 26,1-16 |
| Di | 28 | Mt 26,17-30 |
| Mi | 29 | Mt 26,31-35 |
| Do | 30 | Mt 26,36-46 |
| Fr | 31 | Mt 26,47-56 |

# APRIL

Christus ist gestorben und lebendig geworden, um Herr zu sein über Tote und Lebende.

Röm 14,9 (E)

| | | |
|---|---|---|
| Sa | 1 | Mt 26,57-68 |
| **So** | **2** | **Palmsonntag Ps 69,17-37** |
| Mo | 3 | Mt 26,69-75 |
| Di | 4 | Mt 27,1-14 |
| Mi | 5 | Mt 27,15-30 |
| **Do** | **6** | **Gründonnerstag Mt 27,31-44** |
| **Fr** | **7** | **Karfreitag Mt 27,45-56** |
| **Sa** | **8** | **Karsamstag Mt 27,57-66** |
| **So** | **9** | **Ostersonntag Mt 28,1-10** |
| **Mo** | **10** | **Ostermontag Mt 28,11-20** |
| Di | 11 | Röm 12,1-8 |
| Mi | 12 | Röm 12,9-16 |
| Do | 13 | Röm 12,17-21 |
| Fr | 14 | Röm 13,1-7 |
| Sa | 15 | Röm 13,8-14 |
| **So** | **16** | **Ps 116** |
| Mo | 17 | Röm 14,1-12 |
| Di | 18 | Röm 14,13-23 |
| Mi | 19 | Röm 15,1-6 |
| Do | 20 | Röm 15,7-13 |
| Fr | 21 | Röm 15,14-21 |
| Sa | 22 | Röm 15,22-33 |
| **So** | **23** | **Ps 23** |
| Mo | 24 | Röm 16,1-16 |
| Di | 25 | Röm 16,17-27 |
| Mi | 26 | Spr 1,1-7 |
| Do | 27 | Spr 1,8-19 |
| Fr | 28 | Spr 1,20-33 |
| Sa | 29 | Spr 2,1-22 |
| **So** | **30** | **Ps 100** |

# MAI

Weigere dich nicht, dem Bedürftigen Gutes zu tun, wenn deine Hand es vermag.

Spr 3,27 (L)

| | | |
|---|---|---|
| Mo | 1 | Spr 3,1-12 |
| Di | 2 | Spr 3,13-26 |
| Mi | 3 | Spr 3,27-35 |
| Do | 4 | Spr 4,10-19 |
| Fr | 5 | Spr 4,20-27 |
| Sa | 6 | Spr 5,1-23 |
| **So** | **7** | **Ps 108** |
| Mo | 8 | Spr 6,6-11 |
| Di | 9 | Spr 6,12-19 |
| Mi | 10 | Spr 7,1-27 |
| Do | 11 | Spr 8,1-21 |
| Fr | 12 | Spr 8,22-36 |
| Sa | 13 | Spr 9,1-18 |
| **So** | **14** | **Ps 111** |
| Mo | 15 | Phil 1,1-11 |
| Di | 16 | Phil 1,12-18a |
| Mi | 17 | Phil 1,18b-26 |
| **Do** | **18** | **Christi Himmelfahrt Ps 110** |
| Fr | 19 | Phil 1,27–2,4 |
| Sa | 20 | Phil 2,5-11 |
| **So** | **21** | **Ps 27** |
| Mo | 22 | Phil 2,12-18 |
| Di | 23 | Phil 2,19-30 |
| Mi | 24 | Phil 3,1-11 |
| Do | 25 | Phil 3,12-21 |
| Fr | 26 | Phil 4,1-9 |
| Sa | 27 | Phil 4,10-23 |
| **So** | **28** | **Pfingstsonntag Ps 118,1-14** |
| **Mo** | **29** | **Pfingstmontag Ps 118,15-29** |
| Di | 30 | 1 Mos/Gen 24,1-28 |
| Mi | 31 | 1 Mos/Gen 24,29-49 |

# JUNI

Gott gebe dir vom Tau des Himmels und vom Fett der Erde und Korn und Wein die Fülle.

1 Mos/Gen 27,28 (L)

| | | |
|---|---|---|
| Do | 1 | 1 Mos/Gen 24,50-67 |
| Fr | 2 | 1 Mos/Gen 25,19-34 |
| Sa | 3 | 1 Mos/Gen 27,1-29 |
| **So** | **4** | **Ps 113** |
| Mo | 5 | 1 Mos/Gen 27,30-40 |
| Di | 6 | 1 Mos/Gen 27,41-28,9 |
| Mi | 7 | 1 Mos/Gen 28,10-22 |
| **Do** | **8** | **Fronleichnam 1 Mos/Gen 29,1-14a** |
| Fr | 9 | 1 Mos/Gen 29,14b-30 |
| Sa | 10 | 1 Mos/Gen 31,1-7.14-32 |
| **So** | **11** | **Ps 34** |
| Mo | 12 | 1 Mos/Gen 31,33-54 |
| Di | 13 | 1 Mos/Gen 32,1-22 |
| Mi | 14 | 1 Mos/Gen 32,23-33 |
| Do | 15 | 1 Mos/Gen 33,1-20 |
| Fr | 16 | 1 Mos/Gen 37,1-11 |
| Sa | 17 | 1 Mos/Gen 37,12-36 |
| **So** | **18** | **Ps 4** |
| Mo | 19 | 1 Mos/Gen 39,1-23 |
| Di | 20 | 1 Mos/Gen 40,1-23 |
| Mi | 21 | 1 Mos/Gen 41,1-36 |
| Do | 22 | 1 Mos/Gen 41,37-57 |
| Fr | 23 | 1 Mos/Gen 42,1-28 |
| Sa | 24 | 1 Mos/Gen 42,29-38 |
| **So** | **25** | **Ps 103** |
| Mo | 26 | 1 Mos/Gen 43,1-14 |
| Di | 27 | 1 Mos/Gen 43,15-34 |
| Mi | 28 | 1 Mos/Gen 44,1-34 |
| Do | 29 | 1 Mos/Gen 45,1-24 |
| Fr | 30 | 1 Mos/Gen 45,25-46,7 |

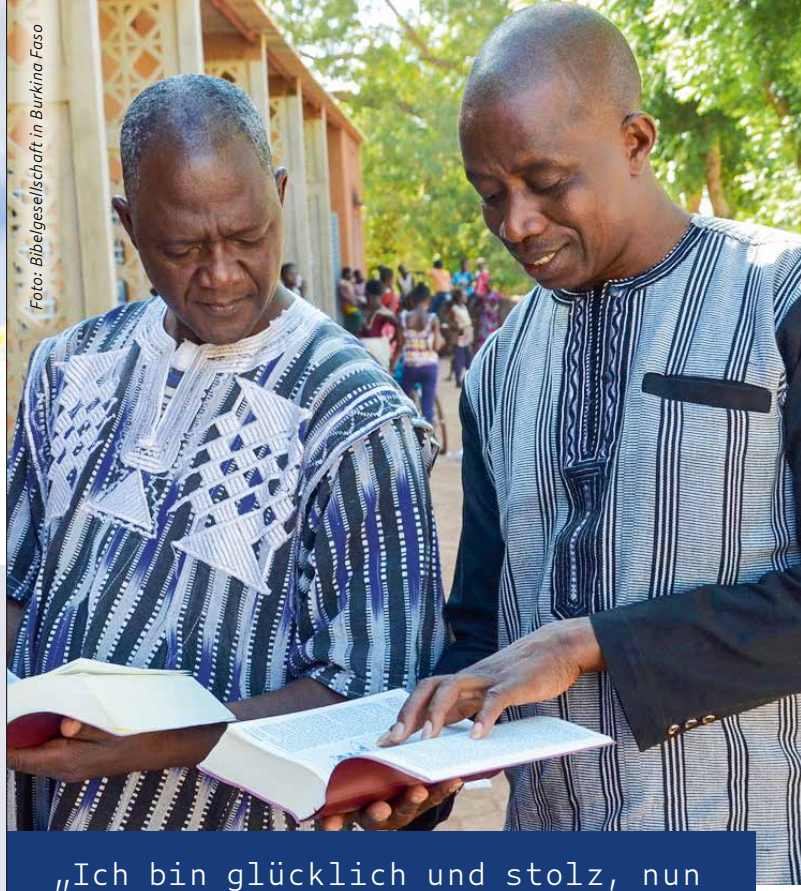

Foto: Bibelgesellschaft in Burkina Faso

„Ich bin glücklich und stolz, nun die Bibel in meiner Muttersprache San lesen zu können."

„Ich wünsche mir, dass viele von diesem großen Reichtum profitieren können, der uns in unserer Muttersprache gegeben wurde", erzählt Albert Pare, der an der neuen Übersetzung in die Sprache San, die von einer Volksgruppe in Burkina Faso gesprochen wird, mitgearbeitet hat. „Mein Wissen über Gott hat sich vertieft und ich lerne gerade, neu zu vertrauen!"

Viele Menschen haben noch keine Bibel in ihrer Muttersprache. Mit Ihrer Unterstützung ermöglichen Sie Projekte zur Bibelübersetzung und -verbreitung, damit weltweit immer mehr Menschen – wie Albert in Burkina Faso – die Botschaft der Bibel in ihrer eigenen Sprache lesen und verstehen können.

Fotocredit: istockphoto.com

„Den Grund, warum ich hier bin, weiß ich noch immer nicht. Aber ich weiß einen Grund, auf den ich bauen kann – und zwar immer und jederzeit: Gott. Er gibt mir Kraft, das alles durchzustehen und auch die Ungerechtigkeit, die ich manchmal empfinde, zu ertragen."

In Justizanstalten haben Insassen viel Zeit, über ihr Leben und ihre Taten nachzudenken. Hier kann die Bibel Halt und Ermutigung geben, die Beschäftigung mit dem Glauben wird besonders existenziell.

Wir stellen **kostenlose Bibelausgaben in vielen Sprachen für Menschen in Haft oder Schubhaft in Österreich** zur Verfügung. In Zusammenarbeit mit Gefängnisseelsorgern der verschiedenen Kirchen können wir dank Ihrer Spende jährlich zahlreiche Bibeln an Insassen verteilen.

**Die Österreichische Bibelgesellschaft möchte auf vielfältige Weise Menschen einen Zugang zur Bibel eröffnen. Wir arbeiten dabei überkonfessionell mit möglichst allen christlichen Kirchen und Gemeinschaften zusammen, um die Bibel zu den Menschen zu bringen.**

**Angebote im Bibelzentrum in Wien:**

- Kompetenzzentrum für die Bibel in Wien
- Angebote für Schulklassen und Gruppen – neue Dauerausstellung!
- Bibeln in allen Sprachen und Ausgaben

BIBEL ZENTRUM

Fotocredit: G.Donauer/ÖBG

# *BIBELLESEN LEICHT GEMACHT MIT NEUEM BIBELKURS*

„Am Punkt." bietet zu jedem biblischen Buch kurze und knackige Einführungen, Hintergrundinfos, Lesetipps und hilft, knifflige Bibelstellen zu verstehen.

**Besonders empfehlenswert**

- zum besseren Verständnis der Bibel beim persönlichen Bibellesen.
- als Diskussionsanregung in der Kleingruppe und im Bibelkreis.
- zum Erkunden der biblischen Bücher im Religionsunterricht.

Jetzt entdecken auf:
**www.bibelgesellschaft.at/am-punkt**

# *JULI*

Jesus Christus spricht: Liebt eure Feinde und betet für die, die euch verfolgen, damit ihr Kinder eures Vaters im Himmel werdet.

Mt 5,44-45 (E)

| | | |
|---|---|---|
| Sa | 1 | 1 Mos/Gen 46,28-34 |
| **So** | **2** | **Ps 77** |
| Mo | 3 | 1 Mos/Gen 47,1-12 |
| Di | 4 | 1 Mos/Gen 47,27-31 |
| Mi | 5 | 1 Mos/Gen 48,1-22 |
| Do | 6 | 1 Mos/Gen 49,1-28 |
| Fr | 7 | 1 Mos/Gen 49,29–50,14 |
| Sa | 8 | 1 Mos/Gen 50,15-26 |
| **So** | **9** | **Ps 101** |
| Mo | 10 | Mt 4,18-22 |
| Di | 11 | Mt 4,23-25 |
| Mi | 12 | Mt 5,1-12 |
| Do | 13 | Mt 5,13-20 |
| Fr | 14 | Mt 5,21-26 |
| Sa | 15 | Mt 5,27-32 |
| **So** | **16** | **Ps 82** |
| Mo | 17 | Mt 5,33-37 |
| Di | 18 | Mt 5,38-48 |
| Mi | 19 | Mt 6,1-4 |
| Do | 20 | Mt 6,5-15 |
| Fr | 21 | Mt 6,16-18 |
| Sa | 22 | Mt 6,19-23 |
| **So** | **23** | **Ps 106,1-23** |
| Mo | 24 | Mt 6,24-34 |
| Di | 25 | Mt 7,1-6 |
| Mi | 26 | Mt 7,7-11 |
| Do | 27 | Mt 7,12-23 |
| Fr | 28 | Mt 7,24-29 |
| Sa | 29 | Mt 8,1-4 |
| **So** | **30** | **Ps 106,24-48** |
| Mo | 31 | Mt 8,5-13 |

# AUGUST

Du bist mein Helfer, und unter dem Schatten deiner Flügel frohlocke ich.

Ps 63,8 (L)

| | | |
|---|---|---|
| Di | 1 | Mt 8,14-17 |
| Mi | 2 | Mt 8,18-22 |
| Do | 3 | Mt 8,23-27 |
| Fr | 4 | Mt 8,28-34 |
| Sa | 5 | Mt 9,1-8 |
| **So** | **6** | **Ps 63** |
| Mo | 7 | Mt 9,9-13 |
| Di | 8 | Mt 9,14-17 |
| Mi | 9 | Mt 9,18-26 |
| Do | 10 | Mt 9,27-34 |
| Fr | 11 | Mt 9,35–10,4 |
| Sa | 12 | Mt 10,5-15 |
| **So** | **13** | **Ps 78,1-31** |
| Mo | 14 | Mt 10,16-26a |
| Di | 15 | Mt 10,26b-33 |
| Mi | 16 | Mt 10,34-39 |
| Do | 17 | Mt 10,40-42 |
| Fr | 18 | Mt 11,1-19 |
| Sa | 19 | Mt 11,20-24 |
| **So** | **20** | **Ps 78,32-55** |
| Mo | 21 | Mt 11,25-30 |
| Di | 22 | Mt 12,1-14 |
| Mi | 23 | Mt 12,15-21 |
| Do | 24 | Mt 12,22-37 |
| Fr | 25 | Mt 12,38-45 |
| Sa | 26 | Mt 12,46-50 |
| **So** | **27** | **Ps 78,56-72** |
| Mo | 28 | Mt 13,1-9.18-23 |
| Di | 29 | Mt 13,10-17 |
| Mi | 30 | Mt 13,24-30.36-43 |
| Do | 31 | Mt 13,31-35 |

# SEPTEMBER

Jesus Christus spricht:
Wer sagt denn ihr, dass ich sei?

Mt 16,15 (L)

| | | |
|---|---|---|
| Fr | 1 | Mt 13,44-46 |
| Sa | 2 | Mt 13,47-52 |
| **So** | **3** | **Ps 112** |
| Mo | 4 | Mt 13,53-58 |
| Di | 5 | Mt 14,1-12 |
| Mi | 6 | Mt 14,13-21 |
| Do | 7 | Mt 14,22-36 |
| Fr | 8 | Mt 15,1-20 |
| Sa | 9 | Mt 15,21-28 |
| **So** | **10** | **Ps 16** |
| Mo | 11 | Mt 15,29-39 |
| Di | 12 | Mt 16,1-12 |
| Mi | 13 | Mt 16,13-23 |
| Do | 14 | Mt 16,24-28 |
| Fr | 15 | Mt 17,1-13 |
| Sa | 16 | Mt 17,14-21 |
| **So** | **17** | **Ps 79** |
| Mo | 18 | Mt 17,22-27 |
| Di | 19 | Mt 18,1-9 |
| Mi | 20 | Mt 18,10-14 |
| Do | 21 | Mt 18,15-20 |
| Fr | 22 | Mt 18,21-35 |
| Sa | 23 | Mt 19,1-12 |
| **So** | **24** | **Ps 114** |
| Mo | 25 | Mt 19,13-15 |
| Di | 26 | Mt 19,16-26 |
| Mi | 27 | Mt 19,27-30 |
| Do | 28 | Mt 20,1-16 |
| Fr | 29 | Mt 20,17-28 |
| Sa | 30 | Mt 20,29-34 |

# OKTOBER

Seid Täter des Worts und nicht Hörer allein; sonst betrügt ihr euch selbst.

Jak 1,22 (L)

| | | |
|---|---|---|
| **So** | **1** | **Ps 104** |
| Mo | 2 | Mt 21,1-11 |
| Di | 3 | Mt 21,12-17 |
| Mi | 4 | Mt 21,18-22 |
| Do | 5 | Mt 21,23-27 |
| Fr | 6 | Mt 21,28-32 |
| Sa | 7 | Mt 21,33-46 |
| **So** | **8** | **Ps 119,1-8** |
| Mo | 9 | Mt 22,1-14 |
| Di | 10 | Mt 22,15-22 |
| Mi | 11 | Mt 22,23-33 |
| Do | 12 | Mt 22,34-46 |
| Fr | 13 | Mt 23,1-22 |
| Sa | 14 | Mt 23,23-39 |
| **So** | **15** | **Ps 119,9-16** |
| Mo | 16 | Jak 1,1-12 |
| Di | 17 | Jak 1,13-18 |
| Mi | 18 | Jak 1,19-27 |
| Do | 19 | Jak 2,1-13 |
| Fr | 20 | Jak 2,14-26 |
| Sa | 21 | Jak 3,1-12 |
| **So** | **22** | **Ps 119,17-24** |
| Mo | 23 | Jak 3,13-18 |
| Di | 24 | Jak 4,1-12 |
| Mi | 25 | Jak 4,13-17 |
| **Do** | **26** | **Nationalfeiertag Jak 5,1-6** |
| Fr | 27 | Jak 5,7-12 |
| Sa | 28 | Jak 5,13-20 |
| **So** | **29** | **Ps 19** |
| Mo | 30 | Hiob 1,1-12 |
| **Di** | **31** | **Reformationstag Hiob 1,13-22** |

# NOVEMBER

Er allein breitet den Himmel aus und geht auf den Wogen des Meers. Er macht den Großen Wagen am Himmel und den Orion und das Siebengestirn und die Sterne des Südens.

Hiob 9,8-9 (L)

| | | |
|---|---|---|
| **Mi** | **1** | **Allerheiligen Hiob 2,1-13** |
| Do | 2 | Hiob 3,1-26 |
| Fr | 3 | Hiob 4,1-21 |
| Sa | 4 | Hiob 5,17-27 |
| **So** | **5** | **Ps 22,1-22** |
| Mo | 6 | Hiob 6,1-10.24-30 |
| Di | 7 | Hiob 7,7-21 |
| Mi | 8 | Hiob 8,1-22 |
| Do | 9 | Hiob 9,1-15.32-35 |
| Fr | 10 | Hiob 11,1-20 |
| Sa | 11 | Hiob 12,1-6; 14,1-12 |
| **So** | **12** | **Ps 22,23-32** |
| Mo | 13 | Hiob 19,21-29 |
| Di | 14 | Hiob 31,16-40 |
| Mi | 15 | Hiob 40,1-5 |
| Do | 16 | Hiob 40,6-32 |
| Fr | 17 | Hiob 42,1-6 |
| Sa | 18 | Hiob 42,7-17 |
| **So** | **19** | **Ps 70** |
| Mo | 20 | Judas 1-16 |
| Di | 21 | Judas 17-25 |
| Mi | 22 | Mt 24,1-14 |
| Do | 23 | Mt 24,15-28 |
| Fr | 24 | Mt 24,29-31 |
| Sa | 25 | Mt 24,32-44 |
| **So** | **26** | **Ewigkeitssonntag Ps 126** |
| Mo | 27 | Mt 24,45-51 |
| Di | 28 | Mt 25,1-13 |
| Mi | 29 | Mt 25,14-30 |
| Do | 30 | Mt 25,31-46 |

# DEZEMBER

Meine Augen haben deinen Heiland gesehen,
das Heil, das du bereitet hast vor allen Völkern.

**Lk 2,30-31 (L)**

| | | |
|---|---|---|
| Fr | 1 | Jes 40,1-11 |
| Sa | 2 | Jes 40,12-31 |
| **So** | **3** | **1. Advent Ps 117** |
| Mo | 4 | Jes 41,8-20 |
| Di | 5 | Jes 42,1-9 |
| Mi | 6 | Jes 43,1-7 |
| Do | 7 | Jes 43,8-13 |
| Fr | 8 | Jes 43,14-28 |
| Sa | 9 | Jes 44,1-5 |
| **So** | **10** | **2. Advent Ps 80** |
| Mo | 11 | Jes 44,6-20 |
| Di | 12 | Jes 44,21-28 |
| Mi | 13 | Jes 45,1-8 |
| Do | 14 | Jes 45,9-17 |
| Fr | 15 | Jes 45,18-25 |
| Sa | 16 | Jes 46,1-13 |
| **So** | **17** | **3. Advent Ps 85** |
| Mo | 18 | Jes 49,1-6 |
| Di | 19 | Jes 49,7-17 |
| Mi | 20 | Jes 50,4-11 |
| Do | 21 | Jes 51,1-8 |
| Fr | 22 | Jes 51,9-16 |
| Sa | 23 | Jes 52,1-12 |
| **So** | **24** | **4. Advent/ Heiliger Abend Ps 115** |
| **Mo** | **25** | **Christtag Lk 1,46-55** |
| **Di** | **26** | **Stephanitag Lk 2,29-32** |
| Mi | 27 | Jes 52,13–53,5 |
| Do | 28 | Jes 53,6-12 |
| Fr | 29 | Jes 54,1-10 |
| Sa | 30 | Jes 55,1-5 |
| **So** | **31** | **Silvester Jes 55,6-13** |

# BESTELLSCHEIN

Ja, ich möchte mehr über die Arbeit der Österreichischen Bibelgesellschaft erfahren!

Bitte senden Sie mir folgende Informationen zu:

_____ Exemplar(e) dieses Bibelleseplans 2023 (1 – 49 Ex. gratis; ab 50 Ex. Spende von € 0,25/Stück erbeten)

☐ Probe-Exemplar(e) unserer kostenlosen Zeitschrift »die Bibel aktuell« (erscheint 4× im Jahr)

☐ Newsletter per E-Mail (erscheint 1× im Monat)

☐ Kalender 2023 mit ausführlichen Informationen über Bibelprojekte in 12 Ländern

**Absender:**

Name _____ Vorname _____

Straße/Hausnummer/Tür _____ PLZ/Ort _____

E-Mail _____ Telefon _____

Datum _____ Unterschrift _____

*Sie können der Zustimmung zum Erhalt des Magazins und/oder des Newsletters jederzeit widersprechen.*

**Bitte ausfüllen und senden an:**

ÖSTERREICHISCHE BIBELGESELLSCHAFT

Österreichische Bibelgesellschaft
Breite Gasse 4 – 8 /1, 1070 Wien
Telefon 01 / 523 82 40
bibelzentrum@bibelgesellschaft.at
www.bibelgesellschaft.at

**Die Österreichische Bibelgesellschaft setzt sich mit ihrer vielfältigen Arbeit dafür ein, dass die Bibel zu den Menschen kommt – in Österreich und in über 200 Ländern der Erde.**

## *KONTAKT*

ÖSTERREICHISCHE BIBELGESELLSCHAFT

**Österreichische Bibelgesellschaft**
Bibelzentrum am MQ
Breite Gasse 4-8/1
1070 Wien
Telefon 01 / 523 82 40
bibelzentrum@bibelgesellschaft.at
www.bibelgesellschaft.at

**Spendenkonto**
Raiba Wien-NÖ
IBAN: AT39 3200 0000 0747 5171
BIC: RLNWATWW

**Herausgeber**
Schweizerische Bibelgesellschaft, Biel
Österreichische Bibelgesellschaft, Wien
Deutsche Bibelgesellschaft, Stuttgart

Der Bibelleseplan wird verantwortet von der Ökumenischen Arbeitsgemeinschaft für Bibellesen (www.oeab.de). Er lädt dazu ein, in täglichen überschaubaren Leseportionen systematisch die ganze Bibel kennen zu lernen. Der Plan führt in vier Jahren einmal durch das Neue Testament und in acht Jahren einmal durch die ganze Bibel. Der Einstieg in den Leseplan ist jederzeit möglich.

Die Textangaben folgen der Verszählung der Lutherbibel.

L = Lutherbibel, revidiert 2017
© 2016 Deutsche Bibelgesellschaft, Stuttgart

E = Einheitsübersetzung der Heiligen Schrift, revidiert 2017
© 2017 Katholische Bibelanstalt, Stuttgart